तेरे मेरे होंठों पे मीठे मीठे गीत मितवा

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

भारतीय फिल्म संगीत के इतिहास में संगीतकारों की कई ऐसी जोड़ियाँ रही हैं जिन्होंने अपनी कला से फिल्मी संगीत को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की। ऐसी ही एक अद्वितीय संगीतकार जोड़ी की आज चर्चा करेंगे. वो जोड़ी है शिव-हरि की जोड़ी. भारतीय संगीत जगत में शिव-हरि की जोड़ी एक ऐसी मिसाल है, जिसने शास्त्रीय संगीत की गहराई को फिल्मी सुगम संगीत की सरलता के साथ बड़ी ही खूबसूरती से पिरोकर, अत्यंत लोकप्रिय और यादगार संगीत प्रस्तुत किया। यह जोड़ी संगीत की दो महान विभूतियों पंडित शिवकुमार शर्मा (मशहूर संतूर वादक) और पंडित हरिप्रसाद चौरसिया (विश्व विख्यात बांसुरी वादक) की जोड़ी थी. हम सब यह तो अच्छी तरह जानते हैं कि शास्त्रीय संगीत के इन दोनों महान कलाकारों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्वभर में प्रतिष्ठा दिलाई है परन्तु कम ही लोग जानते हैं कि इन्होने हिंदी फिल्मों में भी मधुर, शास्त्रीयता और भारतीयता से परिपूर्ण तथा रूह को छू लेने वाला संगीत दिया है.

1980 के दशक में जब फिल्म संगीत में पश्चिमी संगीत का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा था, तब पंडित शिवकुमार शर्मा और पंडित हरिप्रसाद चौरासिया ने मिलकर शास्त्रीय संगीत को आम श्रोताओं के लिए फिल्मों में प्रस्तुत करने बीड़ा उठाया और इसी विचार से शिव:हरि जोड़ी का जन्म हुआ. यद्यपि हरिप्रसाद चौरसिया ने इससे काड़ी पहले भुवन-हरि के नाम से कुछ फिल्मों में संगीत दिया था. अवतार कौल की 27 डाउन (1973) जैसी कलात्मक फिल्म में उनका संगीत था। इसी प्रकार शिव- हरि की जोड़ी बनने से पूर्व भी शिवकुमार शर्मा और हरिप्रसाद चौरसिया को दिग्गज संगीतकारों द्वारा फिल्मी गीतों में संतूर या बांसुरी बजाने के लिए बुलाया जाता था। मदन मोहन की अमर रचना फिर वही शाम वही ग़म वही तन्हाई है में हरि प्रसाद चौरसिया का बांसुरी वादन तथा इसी प्रकार झनक झनक पायल बाजे, बरसात की रात, हम दोनों, कश्मीर की कली और ये रात फिर न आएगी जैसी कई फिल्मों के शिवकुमार शर्मा का संतूर वादन सुना जा सकता है.

दरअसल फिल्मी दुनिया में इस जोड़ी का सफर वर्ष 1981 में यश चोपड़ा की फिल्म सिलसिला से शुरू हुआ। यश राज फिल्म्स के साथ शिव:हरि की जोड़ी का अटूट संबंध रहा। यश चोपड़ा को संगीत के अच्छे ज्ञान के लिए जाना जाता था और कहा जाता है कि उन्होंने ही शास्त्रीय संगीत के इन दोनों दिग्गजों को व्यावसायिक सिनेमा में संगीत देने के लिए राजी किया। अपनी पहली ही फिल्म सिलसिला के लिए फिल्म फेयर के बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर के लिये नामांकित होने के बाद यह जोड़ी, यश चोपड़ा की फिल्मों की स्थायी संगीतकार बन गई. हालांकि यश चोपड़ा की 1985 में आई फासले और 1988 में आई विजय असफल रहीं, लेकिन इन फिल्मों का शिव- हरि का संगीत सराहा गया. फ्लॉप फिल्मों के दौर से गुजर रहे यश चोपड़ा ने साल 1989 में चांदनी बनाई। शिव- हरि के संगीत से सजी ये फिल्म और इस फिल्म के सारे गाने सुपर हिट साबित हुए. इस फिल्म के संगीत ने यश चोपड़ा के करियर को वापिस स्थापित कर दिया.

शिवकुमार शर्मा और हरीप्रसाद चौरसिया की जोड़ी ने कुल 8 फिल्मों के लिए संगीत दिया जिसमें से 7 फिल्में, यश चोपड़ा ने निर्देशित की हैं. वर्ष 1993 में आई साहिबां एकमात्र ऐसी फिल्म थी जिसके लिए शिव हरी ने संगीत दिया था मगर जो यशराज फिल्म्स ने नहीं बनाई थी. हालांकि यह फिल्म भी यश चोपड़ा के ही सहायक रमेश तलवार ने बनाई थी। इसीलिए शिव- हरि की जोड़ी को यश चोपड़ा की फिल्मों के संगीतकार के रूप में भी जाना जाता है। शिव- हरि की यशराज

फिल्म्स के साथ की गई फिल्में हैं, सिलसिला, फासले, चांदनी, विजय, लम्हें, डर और परंपरा.

शिव:हरि द्वारा संगीतबद्ध लगभग सारे गीत यादगार हैं ये कहाँ आ गए हम यूँ हीं साथ साथ चलते, देखा एक ख्वाब तो ये सिलसिले हुए, नीला आसमान सो गया, सर से सरके सरके चुनरिया(सिलसिला), मेरे हाथों में नौ नौ चूड़ियां हैं, लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है, मैं ससुराल नहीं जाऊंगी, तेरे मेरे होंठों पे मीठे मीठे गीत मितवा, चांदनी ओ मेरी चांदनी, पर्बत से काली घटा, महबूबा ,तू मुझे सुना मैं तुझे सुनाऊँ, ओ मेरी जान (चांदनी), कभी मैं कहूँ कभी तुम कहो, म्हारे राजस्थान मां, चूड़ियां खनक गईं, याद नहीं भूल गया, मेरी बिंदिया, मेघा रे मेघा और गुड़िया रानी (लम्हे), जादू तेरी नजर, तू मेरे सामने और दरवाजा बंद कर लो(डर), फूलों के इस शहर में (परंपरा), जनम जनम मेरे सनम, चांदनी तू है कहां, हम चुप हैं कि दिल सुन रहे हैं , सुन ले ये सारा जमाना, इन आंखों के ज़ीने से और मेरा बन्ना दुलहन (फासले), कैसे जिऊंगा मैं अगर तू न बनी मेरी साहिबां (साहिबाँ) आदि प्रमुख गीत हैं।

शिव-हरि की जोड़ी ने कम ही फिल्मों में संगीत दिया, लेकिन जो भी दिया वह यादगार साबित हुआ। फिल्म लम्हे के संगीत में शास्त्रीय संगीत और राजस्थानी लोक संगीत का सुन्दर मेल बखूबी दिखता है, वहीं दूसरी और फिल्म डर में तू मेरे सामने और जादू तेरी नजर जैसे गीतों के साथ शिव-हरि ने आधुनिक आर्किस्ट्रा से सजा संगीत पेश किया। सिलसिला के अमिताभ बच्चन द्वारा गाये गये मशहूर होली गीत रंग बरसे भीगे चुनर वाली को कौन भूल सकता है, इसी प्रकार चांदनी का गीत मेरे हाथों में नौ नौ चूड़ियाँ हैं और मैं ससुराल नहीं जाऊंगी में पंजाबी लोक संगीत का खूबसूरत इस्तेमाल दिखता है. उनके गीतों में भारतीय रागों की महक , मधुर धुनें और भावनात्मक गहराई स्पष्ट रूप से अनुभव की जा सकती है। शिव:हरि के संगीत की सबसे बड़ी विशेषता शास्त्रीयता के साथ सरलता का मेल थी। उन्होंने कभी भी संगीत को बेवजह भारी नहीं बनाया। उनकी धुनों में भारतीय संस्कृति की आत्मा बसती है। बाँसुरी और संतूर का प्रयोग उनके संगीत को अलग पहचान देता है उनका संगीत रोमांस, विरह, प्रकृति और भावनाओं को अत्यंत कोमलता से अभिव्यक्त करता था। उनके गानों की धुनें अक्सर रागों पर आधारित होती थीं, लेकिन वे इतनी सरल और मधुर होती थीं कि आम आदमी भी उन्हें गुनगुना सके जैसे फिल्म सिलसिला में राग भूपाली पर आधारित देखा एक ख्वाब तो ये सिलसिले हुए, इसी फिल्म का राग पहाड़ी पर आधारित नीला आसमां सो गया और राग भैरवी में जो तुम तोड़ो पिया, फिल्म चांदनी का भैरवी आधारित तू मुझे सुना या फिर फिल्म लम्हे का राग भैरवी आधारित गीत मोहे छेड़ो न नंद के लाल आदि।

पंडित शिवकुमार शर्मा और पंडित हरिप्रसाद चौरासिया दोनों को भारतीय संगीत जगत में अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं. उन्हें पदम विभूषण सहित कई राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत किया गया। इस जोड़ी को सिलसिला (1981), चांदनी (1989) , लम्हे (1991) और डर (1993) फिल्मों के लिये, फिल्म फेयर के बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर पुरस्कार के लिये भी नामांकित किया गया. उनकी जोड़ी भारतीय संगीत की धरोहर मानी जाती है। शिव हरि ने हिंदी फिल्म संगीत को शास्त्रीयता, सरलता और मधुरता का नया आयाम दिया। आज भी उनके गीत सुनने पर मन में ताजगी और सुकून का अनुभव होता है। उनके संगीत में संतूर की झंकार और बांसुरी की सुरीली तान का अनूठा मिश्रण मिलता है , जो सुनने वाले को एक अलग ही रूहानी दुनिया में ले जाता है. उनका संगीत सुनना केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक अनुभव प्रतीत होता है।

10 मई, 2022 को पंडित शिवकुमार शर्मा के निधन के साथ ही इस जोड़ी का भौतिक सफर जरूर खत्म हो गया, लेकिन शिव-हरि की बनाई धुनें आज भी भारतीय सिनेमा के खूबसूरत दौर की याद दिलाती हैं। पंडित शिवकुमार शर्मा और पंडित हरिप्रसाद चौरसिया ने यह साबित कर दिया कि शास्त्रीय संगीत को फिल्मों में इस्तेमाल कर यादगार संगीत की रचना की जा सकती है. आज भले ही पंडित शिवकुमार शर्मा हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन शिव-हरि की जोड़ी द्वारा रची गई धुनें यकीनन आने वाले भी सुनी जाएंगी।

आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह चर्चा करेंगे फिल्मों से जुड़ी किसी और महान शख्सियत की, तब तक महान संगीतकार जोड़ी शिव-हरि की लाजवाब धुनों का लुत्फ लीजिये .....!!

लॉक अप 2 ' की नई क्वीन बनीं श्रेया कालरा

रियलिटी शो 'लॉक अप 2' का सफर आखिरकार अपने रोमांचक मुकाम पर पहुंच गया है. कई हफ्तों तक चले विवादों, भावनात्मक पलों, टकराव और जबरदस्त मुकाबले के बाद श्रेया कालरा ने इस सीजन की ट्रॉफी अपने नाम कर ली है. ग्रैंड फिनाले में श्रेया को विजेता घोषित किए जाने के साथ ही उन्हें 1 करोड़ रुपये का कैश प्राइज भी मिला. वहीं टीवी अभिनेत्री शिवांगी जोशी ने फर्स्ट रनर-अप के रूप में सीजन का सफर खत्म किया.

श्रेया और शिवांगी के बीच मुकाबला शुरुआत से ही चर्चा में रहा. जैसे-जैसे शो फिनाले की ओर बढ़ा, दोनों के समर्थकों के बीच भी मुकाबला दिलचस्प होता गया. दर्शकों के बीच लगातार यह सवाल बना हुआ था कि आखिर 'लॉक अप 2' की ट्रॉफी किसके नाम होगी. एक ओर शिवांगी जोशी

को मजबूत दावेदार माना जा रहा था, वहीं श्रेया कालरा ने भी अपने प्रदर्शन और लोकप्रियता के दम पर फिनाले में अपनी जगह मजबूत कर ली थी. ग्रैंड फिनाले में होस्ट फराह खान और रितेश देशमुख ने विजेता चुनने की प्रक्रिया से पर्दा उठाया. उन्होंने बताया कि इस सीजन का फैसला केवल जनता की वोटिंग के आधार पर किया गया. विजेता चुनने के लिए जेलर, कैदियों और जनता की जूरी को मतदान का अधिकार दिया गया था. तीनों पक्षों के वोटों को मिलाकर अंतिम परिणाम तैयार किया गया.

ट्रॉफी के साथ 1 करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि ने उनकी जीत को खास बनाया

सबसे ज्यादा रोमांचक बात यह रही कि श्रेया और शिवांगी के बीच जीत का अंतर बेहद कम रहा. महज सात वोटों ने दोनों के बीच फैसला किया. करीबी मुकाबले में श्रेया कालरा ने सात वोटों से बाजी मार ली और 'लॉक अप 2' की नई क्वीन बन गईं. विजेता घोषित होते ही श्रेया के चेहरे पर खुशी और भावुकता साफ नजर आई. ट्रॉफी के साथ 1 करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि ने उनकी जीत को और खास बना दिया. दूसरी ओर शिवांगी जोशी को फर्स्ट रनर-अप का खिताब मिला. इस तरह 'लॉक अप 2' का सफर श्रेया कालरा की जीत के साथ खत्म हुआ. पूरे सीजन में कई उतार-चढ़ाव देखने के बाद आखिरकार ट्रॉफी का फैसला केवल सात वोटों के अंतर से हुआ, जिसने इस फिनाले को और भी यादगार बना दिया.

दर्द और बदले की कहानी लेकर आया 'आवारापन 2' का ट्रेलर

बॉलीवुड अभिनेता इमरान हाशमी एक बार फिर अपने सबसे चर्चित किरदारों में से एक शिवम पंडित के रूप में वापसी कर रहे हैं. करीब 19 साल के लंबे इंतजार के बाद 'आवारापन 2' का ट्रेलर रिलीज कर दिया गया है. विशेष फिल्म्स की ओर से जारी किए गए ट्रेलर में इमरान हाशमी का एक ऐसा अवतार देखने को मिल रहा है, जिसमें दर्द, गुस्सा, बदले की आग और मुक्ति की तलाश एक साथ दिखाई देती है. ट्रेलर के सामने आते ही फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच चर्चा तेज हो गई है. आवारापन की पहली फिल्म साल 2007 में रिलीज हुई थी और इमरान हाशमी के करियर की यादगार फिल्मों में शामिल रही. अब लगभग दो दशक बाद कहानी को आगे बढ़ाते हुए 'आवारापन 2' में शिवम पंडित की जिंदगी के एक नए अध्याय को दिखाया जाएगा. ट्रेलर के दृश्यों से संकेत मिलता है कि इस बार कहानी सिर्फ बदले तक सीमित नहीं रहने वाली, बल्कि किरदार के अंदर चल रही भावनात्मक जंग को भी सामने लाएगी. ट्रेलर में इमरान हाशमी का लुक काफी गंभीर नजर आता है. चेहरे पर दर्द और आंखों में गुस्सा उनके किरदार की मानसिक स्थिति को बयां करता है. एक्शन दृश्यों के साथ-साथ ट्रेलर में कई ऐसे भावनात्मक पल भी हैं, जो कहानी को एक गहरी पृष्ठभूमि देते हैं. डार्क और सिनेमाई प्रस्तुति फिल्म के माहौल को और प्रभावशाली बनाती है. फिल्म में दिशा पाटनी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं. वह जारा के किरदार में दिखाई देंगी. ट्रेलर में उनके किरदार की मौजूदगी कहानी में एक नया भावनात्मक मोड़ जोड़ती नजर आती है.

19 साल बाद लौटे शिवम पंडित

अभिनेत्री जेनेलिया देशमुख और अभिनेता रितेश देशमुख की प्रेम कहानी बॉलीवुड की उन कहानियों में शामिल है, जो किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं लगती. पहली मुलाकात में गलतफहमी, फिर दोस्ती और धीरे-धीरे प्यार में बदलता रिश्ता... दोनों की कहानी में रोमांस के साथ कई दिलचस्प मोड़ भी देखने को मिले. आज यह जोड़ी बॉलीवुड की सबसे पसंदीदा जोड़ियों में शुमार है, लेकिन कभी ऐसा भी वक्त था जब जेनेलिया रितेश को पसंद नहीं करती थीं. जेनेलिया का जन्म 5 अगस्त 1987 को मुंबई में हुआ था. उन्होंने साल 2003 में फिल्म 'तुझे मेरी कसम' से हिंदी सिनेमा में कदम रखा. खास बात यह है कि इसी फिल्म से रितेश देशमुख ने भी बॉलीवुड में अपना करियर शुरू किया था. फिल्म की शूटिंग के दौरान दोनों पहली बार एक-दूसरे के करीब आए. हालांकि, पहली मुलाकात से पहले ही जेनेलिया के मन में रितेश को लेकर एक अलग धारणा बन चुकी थी. उस समय रितेश के पिता विलासराव देशमुख महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री थे. जेनेलिया को जब पता चला कि वह एक बड़े राजनीतिक परिवार से ताल्लुक रखते हैं, तो उन्होंने मन ही मन मान लिया था कि रितेश घमंडी या बिगड़ैल किस्म के लड़के होंगे.

बिना प्रपोज किए शुरू हुई थी रितेश और जेनेलिआ की कहानी

टेलीविजन हलचल

स्पाइडर-मैन ने जगाई पुष्पा इम्पॉसिबल की यादें

सोनी सब के लोकप्रिय शो 'पुष्पा इम्पॉसिबल' में हाल ही में फ्रेंडली नेबरहुड स्पाइडर-मैन की विशेष मौजूदगी ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। इस खास क्रॉसओवर ने जहां शो में नया रोमांच जोड़ा, वहीं कलाकारों को अपने बचपन के पसंदीदा सुपरहीरोज और उनसे जुड़ी यादों को साझा करने का मौका भी दिया. शो के कलाकारों ने बताया कि बचपन में किस तरह वे अपने पसंदीदा सुपरहीरोज को देखने के लिए उत्साहित रहते थे और उनकी नकल करते हुए खुद को भी हीरो महसूस करते थे. किसी ने कपड़े को केप बनाकर पहना तो किसी ने सुपरहीरो जैसी कल्पनाओं में अपनी दुनिया बसाई. शानाया का किरदार निभाने वाली मुस्कान बामने ने कहा कि वह हमेशा से स्पाइडर-मैन की प्रशंसक रही हैं. उन्होंने कहा कि स्पाइडर-मैन का किरदार उन्हें इसलिए पसंद है क्योंकि वह आम लोगों जैसा लगता है. वह युवा, मजाकिया और कभी-कभी अनाड़ी भी होता है, लेकिन जरूरत पड़ने पर दूसरों की मदद के लिए हमेशा आगे आता है. स्पाइडर-मैन की मौजूदगी उनके लिए बचपन की कई यादों को फिर से जीने जैसा अनुभव रहा. दीप्ति का किरदार निभाने वाली दीक्षा जोशी ने बताया कि वह बैटमैन की बड़ी प्रशंसक रही हैं.

स्पाइडरमैन ने किया 318 करोड़ से ज्यादा नेट कलेक्शन

हॉलीवुड की सुपरहीरो फ्रेंचाइजी 'स्पाइडर-मैन' का क्रेज भारत में भी लंबे समय से देखने को मिलता रहा है और 'स्पाइडर-मैन: ब्रांड न्यू डे' ने एक बार फिर इस लोकप्रियता को बॉक्स ऑफिस के आंकड़ों में बदल दिया है. टॉम हॉलैंड की फिल्म ने भारत में रिलीज के सात दिनों के भीतर शानदार कारोबार किया है. वीकडे में कलेक्शन में गिरावट के बावजूद फिल्म की कमाई की रफ्तार ने ट्रेड एनालिस्ट और फिल्म प्रेमियों का ध्यान खींचा है. फिल्म ने बुधवार को 15.20 करोड़ रुपये का कारोबार किया. इसके साथ ही भारत में फिल्म का ग्रॉस कलेक्शन 380.78 करोड़ रुपये और नेट कलेक्शन 318.45 करोड़ रुपये हो गया है. फिल्म के सात दिनों के कलेक्शन पर नजर डालें तो पहले दिन इसने 60.60 करोड़ रुपये कमाए. दूसरे दिन फिल्म का कारोबार 49.35 करोड़ रुपये रहा. तीसरे दिन कमाई बढ़कर 70.25 करोड़ रुपये पहुंच गई, जबकि चौथे दिन फिल्म ने 77.75 करोड़ रुपये का शानदार कलेक्शन किया. फिल्म की कहानी 'स्पाइडर-मैन: नो वे होम' के करीब चार साल बाद की घटनाओं को आगे बढ़ाती है. पिछली फिल्म में डॉक्टर स्ट्रेंज के जादू के बाद पीटर पार्कर की पहचान और उसके करीबियों की यादें उससे जुड़ी घटनाओं से मिट जाती हैं.

भारत में छाया 'स्पाइडर-मैन: ब्रांड न्यू डे' का जादू

एकलव्य के आगमन से गुरु द्रोणाचार्य की परीक्षा

सोनी सब के पौराणिक धारावाहिक 'हस्तिनापुर के वीर' के आगामी एपिसोड में गुरु द्रोणाचार्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ देखने को मिलेगा, जब एकलव्य उनके समक्ष शिष्य बनने का आग्रह करेगा और उन्हें अपने वचन तथा गुरु धर्म के बीच कठिन निर्णय लेना पड़ेगा. धारावाहिक में पांडवों और कौरवों के बचपन की कहानी दिखाई जा रही है. आगामी कड़ी में गुरु द्रोणाचार्य राजकुमारों को धनुर्विद्या का प्रशिक्षण देते हुए अर्जुन (उर्वा सावल्या) की असाधारण प्रतिभा और समर्पण को पहचानते हैं. इसी दौरान युवा धनुर्धर एकलव्य अपने कौशल से सभी को प्रभावित करता है और द्रोणाचार्य से उन्हें अपना शिष्य बनाने का अनुरोध करता है. एकलव्य की प्रतिभा और दृढ़ संकल्प से प्रभावित होने के बावजूद द्रोणाचार्य अर्जुन से किए गए अपने वचन के कारण गहरी दुविधा में पड़ जाते हैं. गुरु द्रोणाचार्य की भूमिका निभा रहे अभिनेता जितेन लालवानी ने कहा कि एकलव्य का आगमन उनकी शिक्षक यात्रा का बेहद महत्वपूर्ण क्षण है. उन्होंने कहा, 'यह केवल शिष्य चुनने की बात नहीं है, बल्कि गुरु द्रोणाचार्य के किरदार निभाने के साथ आने वाली जिम्मेदारियों के प्रति सच्चे रहने की भी बात है.' उन्होंने कहा कि द्रोणाचार्य के लिए शिक्षा का अर्थ प्रतिभा को पहचानना और हर विद्यार्थी को उसका सर्वश्रेष्ठ बनने में मदद करना है. एकलव्य निष्ठावान, विनम्र और सीखने के लिए समर्पित बालक है, जबकि अर्जुन के प्रति भी उनकी विशेष जिम्मेदारी है. यही द्वंद्व इस प्रसंग को और रोचक बनाता है.

प्रीति जिंटा ने ब्रेट ली से दोस्ती का राज खोला

बॉलीवुड और क्रिकेट का रिश्ता हमेशा से दर्शकों के बीच खास आकर्षण का केंद्र रहा है. जब किसी क्रिकेटर और अभिनेत्री का नाम एक साथ जुड़ता है तो चर्चाओं का दौर शुरू होना भी स्वाभाविक है. कुछ ऐसा ही ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट ली और बॉलीवुड अभिनेत्री प्रीति जिंटा के साथ हुआ था. करीब डेढ़ दशक पहले दोनों के बीच कथित अफेयर की खबरों ने खूब सुर्खियां बटोरी थीं. हालांकि, अब ब्रेट ली ने इन पुरानी अटकलों पर अपनी चुप्पी तोड़ते हुए साफ कर दिया है कि उनके और प्रीति जिंटा के बीच कभी प्रेम संबंध नहीं रहा. ब्रेट ली से 2000 के दशक में प्रीति जिंटा के साथ उनके कथित रिश्ते को लेकर सवाल किया गया. इस पर उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि सबसे बड़ी खबर यही है कि उन्होंने कभी किसी बॉलीवुड अभिनेत्री को डेट नहीं किया. उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रीति और उनके बीच हमेशा सिर्फ दोस्ती रही है और दोनों एक-दूसरे का सम्मान करते हैं.

शाहरुख खान बने सबसे मूल्यवान सेलेब्रिटी ब्रांड

क्रोल की सेलेब्रिटी ब्रांड वैल्यूएशन रिपोर्ट 2025 के अनुसार, अभिनेता शाहरुख खान भारत के सबसे मूल्यवान सेलेब्रिटी ब्रांड बन गए हैं, जबकि रणवीर सिंह ने क्रिकेटर विराट कोहली को पीछे छोड़ते हुए दूसरा स्थान हासिल कर लिया है.रिपोर्ट के अनुसार , भारत के शीर्ष 25 सेलेब्रिटी ब्रांड्स की कुल ब्रांड वैल्यू दो अरब अमेरिकी डॉलर आंकी गई है. यह पिछले वर्ष की तुलना में 3.7 प्रतिशत कम है. इस सूची में 13 पुरुष और 12 महिला हस्तियां शामिल हैं. ब्रांड वैल्यू का आकलन उनके विज्ञापन पोर्टफोलियो, एंडोर्समेंट और सोशल मीडिया प्रभाव के आधार पर किया गया है. शाहरुख खान ने इस साल शानदार वापसी करते हुए पहला स्थान हासिल किया है. वर्ष 2024 में वह तीसरे स्थान पर थे. वहीं रणवीर सिंह 162.9 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ब्रांड वैल्यू के साथ दूसरे स्थान पर रहे हैं. पिछले साल शीर्ष स्थान पर रहे क्रिकेटर विराट कोहली इस बार 158.4 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ब्रांड वैल्यू के साथ तीसरे स्थान पर खिसक गए हैं. रणवीर सिंह की बढ़ती ब्रांड वैल्यू उनके विज्ञापन बाजार में प्रभाव और डिजिटल लोकप्रियता को दर्शाती है.